ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 4

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

हम जानते हैं कि यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय भविष्य विश्व के होवनहार श्रेष्ठ पदाधिकारियों का निर्माण करने के लिए रचा गया है। हम आत्माओं में से ही कई आत्मायें श्रेष्ठ राज्य अधिकारी बनेंगे और इसी संदर्भ में हमें विचार करना होगा कि हमारी उस समय की ज़िम्मेवारी क्या होगी और उसे हम पूरा कैसे करेंगे, इसके लिए यह लेख लिख रहा हूँ।

हम जानते हैं कि शिवबाबा हम दैवी आत्माओं को विश्व के राज्य कारोबार के लिए निमित्त बनाते हैं जिसे आज तक भी लोग रामराज्य कहकर याद करते हैं। ऐसा श्रेष्ठ राज्य कारोबार करने के लिए सर्वप्रथम समस्या का समाधान करने की शक्ति चाहिए। योग से हमें अष्टशक्तियाँ प्राप्त होती हैं जिसके फलस्वरूप अगर कोई समस्या या उलझन आती है तो उस समय निर्णय करना आसान हो जाता है। अगर उस समय समस्या का समाधान नहीं कर पाते तो मनोबल कम हो जाता है, मानसिक आघात होता है। यह मानसिक आघात इतना ज़बर्दस्त होता है कि कई आत्मायें ऐसे समय पर आत्महत्या कर लेती हैं या अवसाद (depression) का शिकार हो जाती हैं। हम सब जानते हैं कि भारत के कई किसानों ने कर्ज़ के बोझ के कारण आत्महत्यायें कर ली थीं जिस कारण कमाने वाले व्यक्ति के जाने के बाद उनके परिवार पर और अधिक कर्ज़ का बोझा हो गया।

इसलिए हमें अपने आपमें विश्वास पैदा करना होगा। अगर हममें आत्मविश्वास का अभाव होगा तो कइयों की शाब्दिक टीका-टिप्पणी का हमारे ऊपर गलत प्रभाव पड़ सकता है और हम अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं। देखा गया है कि दस मनुष्यों में से एक मनुष्य मानसिक तनाव से दु:खी होता है और उस समय वह हताश, निराश हो जाता है। शिवबाबा ने हमें परिस्थिति के आगे परवश ना होते हुए उस पर विजयी होना सिखाया है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा हैं। उन्होंने हर प्रकार की समस्या में विचलित हुए बिना समाधान किया और समाधानस्वरूप बने। प्यारे शिवबाबा हमें फॉलो फादर का पाठ पक्का कराते हैं। ब्रह्मा बाबा ने यज्ञ की स्थापना के समय किस प्रकार से समस्याओं का निराकरण एवं समाधान किया इस पर हम विचार कर सकते हैं। जैसे सिंध हैदराबाद में जब यज्ञ की स्थापना हुई तो वहाँ पर पवित्रता के कारण कोर्ट केस हुआ, पिकेटिंग हुई या विरोध हुआ, तो ऐसी हर समस्या में ब्रह्मा बाबा ने रास्ता निकाल कर समस्या का निराकरण किया।

जब बाबा ने सिंध-हैदराबाद से कराची में स्थानांतरण किया तो उनके सामने भवन की बहुत बड़ी समस्या आई क्योंकि हैदराबाद में तो बाबा का खुद का मकान था। कराची में बाबा ने ज्यादातर मकान किराये पर ही लिए और जब 1950 में बाबा भारत आये तब उनको छोड़ना सहज हुआ। सिंधी भाई-बहनें जिनके अपने मकान थे उन्हें विभाजन के समय बहुत कम कीमत पर वे बेचने पड़े जिससे बहुत आर्थिक नुकसान हुआ।

सन् 1947 में विभाजन के समय ब्रह्मा बाबा यज्ञ सहित कराची में रहे। उस समय जब कि चारों ओर खून की नदियाँ बह रही थीं, ब्रह्मा बाबा ने यज्ञ को बचाकर रखा और यज्ञ की सेवाओं का विस्तार किया। हम समझ सकते हैं कि कैसे शिवबाबा की मदद से ब्रह्मा बाबा ने यह कार्य किया। बाद में बहनों के रिश्तेदारों आदि के कहने पर यज्ञ का स्थानांतरण भारत में माउंट आबू में हुआ। उस कार्य के लिए भी ब्रह्मा बाबा ने पहले बड़ी दीदी को भारत में भेजा और योग्य स्थान लेने के निमित्त बनाया। बड़ी दीदी ने

माथेरान आदि स्थानों पर चक्कर लगाया और फिर अहमदाबाद पहुँचे और वहाँ से माउंट आबू आये। ब्रह्मा बाबा ने भी इसे योग्य समझा और इसे पक्का किया इस प्रकार सारा यज्ञ कराची से माउंट आबू में स्थानांतरित हुआ।

आबू में सब बृजकोठी में रहने आये पर वहाँ भटकती आत्माओं (Evil Souls) आदि की परेशानी का बाबा को सामना करना पड़ा। इसके बाद फिर भरतपुर कोठी और कोटा हाऊस में रहे परंतु वहां रहते-रहते भी बहुत सी समस्यायें आईं। वहां की एक कोठी राज्य सरकार ने अपने मंत्रियों के लिए चुनी थी और जहां बाबा रहते थे वह मुख्यमंत्री के लिए चुनी थी। इस कारण भरतपुर कोठी और कोटा हाऊस आदि सरकार के कब्जे में चले गये और सरकार के द्वारा हमें अनेक नोटिस आते रहे।

मैं ये सब बातें इसलिए विस्तार से लिख रहा हूँ ताकि सभी को पता चले कि ऐसी बड़ी-बड़ी समस्याओं का निराकरण प्यारे ब्रह्मा बाबा ने कैसे किया। जब-जब मंत्री से नोटिस आता था तो दादा विश्व किशोर जयपुर जाकर उसकी समयावधि बढ़ाकर लाते थे। अंत में दादा विश्व किशोर जब दिसम्बर-जनवरी में जयपुर गये तो मंत्री ने कह दिया, मैं आपको यह अंतिम चेतावनी देता हूँ कि आप दो

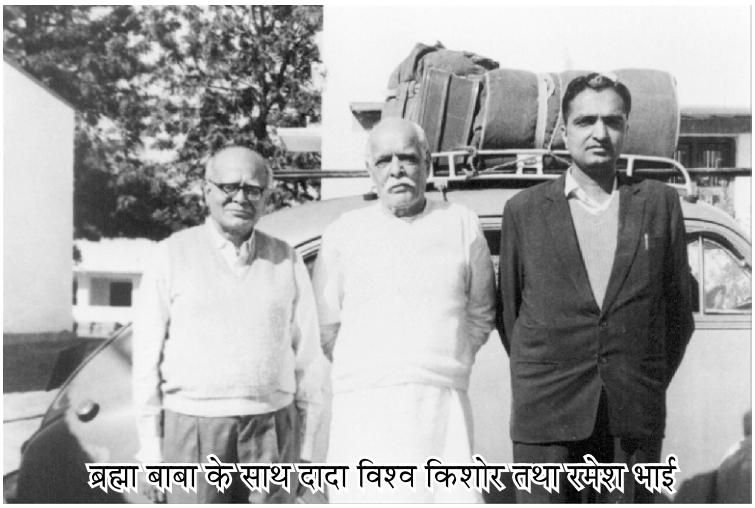

ब्रह्मा बाबा के साथ दादा विश्व किशोर तथा रमेश भाई

मास के अन्दर कोठी खाली कर दीजिए, अगर नहीं की तो सिरोही के ज़िला कलेक्टर द्वारा इसे ज़बर्दस्ती खाली करवाऊंगा।

उस समय माउंट आबू में कोई अच्छे मकान नहीं मिल रहे थे। पोखरण हाऊस जो वर्तमान में पाण्डव भवन है वह किसी को पसंद नहीं आता था इसलिए बाबा ने दादा विश्व किशोर को फिर से लोक निर्माण विभाग (Public Works Department) के तत्कालीन मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी के पास भेजा। दादा ने मंत्री जी को फिर से दो मास की अवधि बढ़ाने के लिए कहा तो मंत्री जी ने कहा कि अगर आप को मैं अवधि और बढ़ाकर दूँ तो हमारे मुख्यमंत्री जी नाराज़ होंगे क्योंकि इस कोठी की मरम्मत आदि करानी है। इसलिए मैं आपको 24 घंटे की अवधि देता हूँ और अगर इस अवधि में इसे खाली नहीं करेंगे तो मैं सिरोही कलेक्टर के द्वारा आपका सारा सामान बाहर निकलवा दूँगा। मंत्री जी के कहने के बाद दादा ने बाबा से पूछा कि बाबा, अब क्या करें? उस समय भी ऐसी विकट समस्या का समाधान बाबा ने हिम्मत ना हारते हुए किया और दादा विश्व किशोर को कहा कि पटना में बाबा का बच्चा हीरालाल जालान है, वह राष्ट्रपति का दोस्त है, उनके द्वारा राष्ट्रपति से एक निवेदन-पत्र (Request Letter) लेकर फिर आप जयपुर में मंत्रीजी के पास जाओ। तो दादा ने पटना फोन किया और दूसरे दिन सुबह के हवाई जहाज से हीरालाल जालान जी दिल्ली पहुँचे। दादा ने उनका वहां स्वागत किया और दोनों फिर राष्ट्रपति भवन गये। राष्ट्रपति जी से मिलने का जब समय मांगा तो उनके सचिव ने कहा कि राष्ट्रपति जी बिना पूर्व-अनुमति (Appointment) के किसी से भी मिलते नहीं हैं। इसलिए दोनों

राष्ट्रपति जी के कार्यालय के बाहर ही बैठ गये तो देखा कि 5-10 मिनट में ही राष्ट्रपति जी बाहर आये। जब उन्होंने हीरालाल जी और दादा को देखा तो उन्होंने हीरालाल जी को सीधा ही अन्दर बुलाया क्योंकि हीरालाल जी और श्री राजेन्द्र प्रसाद जी दोनों ही बचपन के दोस्त थे और दोनों ने ही भारत की आजादी के आंदोलन में कदम से कदम मिलाकर काम किया था। जालान जी ने माउंट आबू के किराये के मकान को खाली करने की समस्या के बारे में सब समाचार बताया और राष्ट्रपति जी से कहा कि इनको कम से कम दो मास की अवधि बढ़ाकर दी जानी चाहिए। राष्ट्रपति जी ने अपने सचिव के द्वारा राजस्थान के मंत्री के नाम एक चिट्ठी लिखवाई और वह टाइप होते ही उन्होंने उस पर हस्ताक्षर किये। इसे लेकर जालान जी और दादा दोनों ही जयपुर मंत्री जी के पास गये। उस समय शाम हो गई थी और सचिवालय बंद होने से थोड़े समय पहले ही ये मंत्रीजी के पास पहुँचे और उनसे मिलने के लिए चिट्ठी भेजी। मंत्रीजी ने उनसे पूछा कि कोठी अब तक खाली की या नहीं, तो दादा ने कहा कि हमारा एक मित्र है वह आपसे कुछ कहना चाहता है और ऐसे कहकर जालान जी को अन्दर बुलाया। जालान जी ने राष्ट्रपति जी का लिफाफा उन्हें दिया। राष्ट्रपति जी की चिट्ठी पढ़कर मंत्रीजी शांत हो गये और अंतिम बार दो महीने की अवधि बढ़ाकर दी। फिर दादा और जालान जी आबू आये।

इस विकट परिस्थिति का विशेष समाचार सभी यज्ञ वत्सों को बताया गया इसलिए सब यज्ञ वत्सों ने पोखरण हाऊस में अपना आवास स्थानांतरित करने के लिए हाँ कह दी। पोखरण हाऊस पहले बाबा ने किराये पर लिया और फिर उसे यज्ञ की सम्पत्ति के रूप में खरीद कर लिया। पोखरण हाऊस पोखरण के राजा का ग्रीष्मकालीन घर (Summer House) था परंतु इतना अच्छा नहीं था। आज जहां शान्ति स्तम्भ है वहां पर दो टेनिस कोर्ट थे और राजा को घुड़सवारी का बहुत शौक था इसलिए जहां कभी ईशु दादी जी का ऑफिस रहा, वहां पर घोड़ों के पानी पीने का स्थान था। धीरे-धीरे ब्रह्मा बाबा ने सुविधानुसार वहाँ का प्रबंध किया और आज वह पोखरण हाऊस यज्ञ का मुख्यालय बन गया है। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा ने समय प्रति समय जो भी समस्यायें आईं, उनका निवारण किया, कभी भी मूँझे नहीं।

जब दिल्ली का पांडव भवन ट्रस्ट में खरीद किया और उसे खरीदने के बाद मैं मधुबन गया तब अव्यक्त बापदादा की पधरामणि हुई थी। मैंने बापदादा को भवन खरीदने का समाचार सुनाया और पूछा कि बाबा मकान का नाम क्या रखें? बापदादा ने जवाब दिये बिना मुझसे ही पूछा कि क्या नाम रखना चाहिए? मैंने बाबा को कहा कि पाण्डव भवन नाम होना चाहिए। फिर बाबा ने कहा, बहुत अच्छी बात है, आबू का पाण्डव भवन संगमयुग का मुख्यालय रहेगा और दिल्ली का पाण्डव भवन भविष्य के कारोबार के लिए मुख्यालय रहेगा।

हमारे पास भी समस्यायें तो आयेंगी ही परंतु हमें योगयुक्त, युक्तियुक्त होकर यथार्थ निर्णय लेकर हर समस्या का समाधान करना है। समस्या समाधान के लिए सबसे ज़रूरी है हमारी ज्ञान-योग की धारणा। जितनी-जितनी हमारी धारणायें पक्की होंगी, उतना ही हमारा निर्णय स्पष्ट, योग्य और दूरांदेशी भी होगा। ईश्वरीय सेवा के कारोबार में समस्या समाधान करना आना बहुत ज़रूरी है क्योंकि आज की दुनिया में समस्यायें बहुत बढ़ती जा रही हैं। सर्वशक्तिवान बाबा सर्वव्यापी नहीं है परंतु माया सर्वव्यापी है। थोड़े समय पहले अव्यक्त बापदादा ने मुझे कहा था कि अंतिम समय जो भी समस्यायें आयेंगी उसके लिए बच्चों को तैयार होना चाहिए क्योंकि उस समय खून की नदियाँ बहेंगी, भयंकर बीमारियाँ होंगी, प्रकृति के पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा, चारों ओर अंधेरा होगा, ट्रेन्स, हवाई जहाज आदि नहीं चलेंगे और भी अनेक

प्रकार की समस्यायें होंगी। ऐसे समय पर हमें अपने मनोबल के आधार पर ही समस्या का समाधान करना पड़ेगा।

अभी भी यज्ञ में विभिन्न प्रकार के कारोबार होते हैं जिनमें कई प्रकार की अड़चनें आती हैं। उनमें बापदादा की मदद मिलती है तब महसूस होता है कि बाबा हमें अनुभवी बना रहे हैं। भविष्य में 2500 वर्ष जब हम राज्य करेंगे तब अनेक प्रकार की समस्यायें आयेंगी। कुछ समस्यायें मीठी, कुछ खट्टी तो कुछ कड़वी होंगी। समस्याओं का समाधान कैसे करना है, इसके लिए बाबा हमें तैयार कर रहा है।

शास्त्रों में कथा है, राजा दशरथ ने जब ऐलान किया कि कल राजकुमार राम का राज्याभिषेक होगा तो यह सुनकर उसी रात रानी कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वरदान मांगे जिनमें एक था कि श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास और दूसरा भरत को राज्यभाग्य मिले। बाद में राजा दशरथ ने श्रीराम के वनवास विरह के कारण देहत्याग कर दिया। इसका कारण था कि जो संकट उनके सामने आया उसे वे सहन नहीं कर सके और शरीर त्याग दिया।

सतयुग-त्रेतायुग में हमारी प्रजा की जो समस्यायें होगी उनका निवारण करने के लिए आत्मबल व बुद्धिबल को मजबूत बनाना पड़ेगा और ये सब तैयारियाँ हमें संगमयुग में ही करनी पड़ेंगी। जब भी हमारे सामने कोई समस्या आये तो हम सोचें कि हमारे ब्रह्मा बाबा-मातेश्वरी जी इस समस्या का समाधान कैसे करते। हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जी तथा दादियों ने किस तरह समस्याओं का समाधान एवं निराकरण किया, इस पर एक किताब लिखी जा सकती है।

उम्मीद करता हूं कि आप सभी भी हर प्रकार की परिस्थिति में उत्तीर्ण बनेंगे। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ यह लेख लिख रहा हूँ। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

दिसम्बर, 2013 के लेखों ने समाँ बाँध 'ज्ञानामृत' को नया सौंदर्य प्रदान किया है। ब्र.कु.रमेश भाई के क्रमवार लेख 'ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की जरूरत' से जो जानकारियाँ मिली वे दुर्लभ प्राप्ति महसूस हुई। 'लाभकारी होती है कड़वी दवाई' लेखिका बहन की यह दवाई काफी मीठी लगी। 'क्रोध को पराजित करो' लेख बड़ा हृदयग्राही महसूस हुआ।

– शम्भूप्रसाद ढौंडियाल, जयपुर

पिछले तीन वर्षों में मैंने ज्ञानामृत के कई लेख पढ़े। सब ज्ञानवर्धक एवं ऊर्जावर्धक होते हैं। लेख पढ़ने से ही कई समस्याओं का समाधान हो जाता है। पत्रिका पूर्णतया विज्ञापन रहित है। ऐसी पत्रिका मैंने 'ज्ञानामृत' व 'अखण्ड ज्योति' देखी। नवम्बर अंक में 'कामजीत जगतजीत' अच्छा लगा। भारतीय समाज व संस्कृति के लिए यह अमृत है। लेखक व संपादक को धन्यवाद।

– ब्र.कु.चण्डी प्रसाद शर्मा, दिलशाद कालोनी (दिल्ली)

नवम्बर, 2013 अंक पढ़कर भरपूर बौद्धिक आनंद प्राप्त हुआ। 'प्रश्न हमारे उत्तर दादीजी के' पढ़कर ज्ञान में वृद्धि हुई। भगवान से बातें करनी हैं तो क्या करें?' इस विषय पर दादी जी ने बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। 'कामजीत जगतजीत' इस विस्तारपूर्ण लेख ने बुद्धि को खाद्य दिया और हृदय को छू लिया। काम महाशत्रु है और दुख देने वाला है यह वैश्विक सत्य इसमें प्रतिपादन किया गया है। 'दिल से देते चलो दुआयें' लेख भी विचार प्रवर्तक है तथा विस्तार से लिखा हुआ है। दुआओं में है जादुई शक्ति और दुआओं का सम्बन्ध दिल के पवित्र संकल्पों से है, यह पढ़कर विचारों को गति मिली। 'ज्ञानामृत' पत्रिका दिन-प्रतिदिन अधिक लोकप्रिय हो, यही शुभकामना है।

– ब्र.कु.डा.वामनराव पाठक, भोपाल